इकाई 18 युवा वर्ग : पहचान और अलगाव

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 'युवा' एवं 'युवा' संस्कृति की परिभाषा

18.2.1 युवा

18.2.2 युवा संस्कृति

18.3 भारतीय युवा वर्ग की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ

18.3.1 युवा जनसंख्या का लिंग अनुपात

18.3.2 ग्रामीण-शहरी वितरण

18.3.3 वैवाहिक प्रस्थिति

18.3.4 युवा वर्ग की शिक्षा संबंधी उपलब्धियाँ

18.3.5 युवा वर्ग की कार्यकारी जनसंख्या

18.3.6 युवा जनसंख्या में वृद्धि का निहितार्थ

18.4 युवा वर्ग की बदलती हुई मूल्य पद्धति और अलगाव

18.4.1 बदलती हुई मूल्य पद्धति

18.4.2 अलगाव

18.5 छात्र असंतोष

18.5.1 छात्र असंतोष के कारण

18.5.2 छात्र असंतोष के निहितार्थ

18.6 युवा समस्या के कुछ संभावित दृष्टिकोण

18.7 सारांश

18.8 शब्दावली

18.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

इस इकाई में हमने भारत में युवा वर्ग के समसामयिक आयामों पर चर्चा की है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपके द्वारा संभव होगा :

- भारत में युवा जनसंख्या की जनसांख्यिकीय स्थिति की व्याख्या करना;
- युवा विद्यार्थी एवं युवा गैर-विद्यार्थी के बीच अंतर करना;
- युवा वर्ग की परंपरागत और परिवर्तनशील मूल्य पद्धति की जाँच करना;
- अलगावित युवाओं की समस्याएँ जानना;

- उन कारकों और समस्याओं का विवेचन करना जिनके कारण छात्र असंतोष होता है; और
- युवाओं के लिए बनाए गए कुछ कार्यक्रमों की चर्चा करना।

18.1 प्रस्तावना

भारत में युवा अध्ययन में कई आयामों का विचार अंतर्निहित है। युवा वर्ग को परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों तरह से समझा जा सकता है। गुणात्मक विवरण का अभिप्राय सामाजिक-सांस्कृतिक परिवृत्यों पर चर्चा करने से है। परिमाणात्मक शब्द का अभिप्राय जनसंख्या में युवाओं के अनुपात के अनुमानों पर चर्चा करना है, अर्थात् शिक्षा, व्यवसाय, आय, जीवन-स्तर, शहरी-ग्रामीण अंतर जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक परिवृतियों की चर्चा करना है। युवाओं पर समाजशास्त्रीय चर्चा भारत में युवाओं के सामाजिक-जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर आधारित की जानी चाहिए।

हमने यह इकाई "युवा" शब्द की परिभाषा से शुरू की है। इसके बाद हमने युवाओं के जनसांख्यिकीय परिवृतियों अर्थात् आयु-लिंग, शहरी-ग्रामीण वितरण, वैवाहिक प्रस्थिति, शैक्षिक उपलब्धि और बेरोजगारी दर पर ध्यान केंद्रित किया है।

परंपरागत मूल्य पद्धति, अलगाव, पहचान संकट से युवाओं के मतभेदों पर संक्षिप्त चर्चा की गई है। उसके बाद छात्र असंतोष के कारणों पर चर्चा है। अंत में हमने युवाओं के भावी कार्यक्रमों पर समाजशास्त्रियों के प्रेक्षणों का उल्लेख किया है।

18.2 'युवा' एवं 'युवा संस्कृति' की परिभाषा

आइए, सबसे पहले हम यह जान लें कि युवा शब्द से हमारा क्या अभिप्राय है। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से इसे एक जैवभौतिक अवस्था (biophysical stage) माना जाता है लेकिन सामाजिक समस्या के अध्ययन से युवा शब्द का गहन समाजशास्त्रीय महत्त्व है।

18.2.1 युवा

युवा शब्द तकनीकी रूप में प्रयुक्त नहीं किया जाता है बल्कि यह नियत जनसंख्या के 15-24 वर्ष के आयु-वर्ग के व्यक्तियों की विशेषताओं की श्रृंखला का वर्णन करता है। यह शब्द भ्रमात्मक है। कुछ के विचार में युवा एक जैविक प्रकृति के तत्त्वों द्वारा विशिष्टीकृत अवस्था होती है अर्थात् वे जैवभौतिक परिवर्तन जो बचपन और प्रौढ़ता के बीच मोटे तौर पर 15 और 24 वर्ष के आयु-वर्ग में होते हैं। इसीलिए युवा वर्ग पर किए गए बहुत से अध्ययनों में 15-24 वर्ष की आयु के युवाओं को शामिल किया गया है।

इस प्रकार के वर्गीकरण में अंतर्निहित कमी को महसूस करते हुए जिसके अंतर्गत इस आयु वर्ग को संपूर्ण देश में बहुत-सी जटिल समस्याओं के लिए समानता से नहीं अपनाया जा सकता है, फिर भी समाजशास्त्रियों सहित समाजविज्ञान अधिकतर इस आयु-वर्ग वर्गीकरण पर निर्भर करते हैं। इस इकाई में युवाओं पर चर्चा के लिए 15-24 वर्ष का आयु-वर्ग ही लिया गया है। इस वर्गीकरण के साथ-साथ समाजशास्त्रीय रूप से "युवा संस्कृति" की धारणा जुड़ी हुई है। यह एक प्रासंगिक धारणा है। आइए, भारतीय संदर्भ में इसकी जाँच करें।

18.2.2 युवा संस्कृति

यूरोपीय-अमेरिकन समाजशास्त्रियों, उदाहरणतः बेनेट बर्जर (1963) ने बहुधा युवा संस्कृति के बारे में चर्चा की है। पश्चिमी समाजों में युवा संस्कृति को अभिन्न समझा जाता है और इसी कारण इसे उप-सामाजिक पद्धति माना जाता है जैसा कि अश्वेत संस्कृति, अमेरिकी, मैक्सिकन संस्कृति, आदि। परंतु भारत जैसे देश में युवा सामाजिक व्यवस्था के कुछ अन्य तत्त्वों से बहुत निकटता से जुड़े हुए हैं। इसलिए विदेशी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत युवा संस्कृति की धारणा को भारतीय समाजशास्त्री अनिच्छा से स्वीकार करते हैं। युवा वर्ग की चर्चा में हमने युवाओं को भारतीय समाज की "सामाजिक-जनसांख्यिकीय अथवा सांख्यिकीय श्रेणियों" के रूप में लिया है।

भारत में युवा वर्ग से संबंधित समाजशास्त्रीय अध्ययनों में कई आयामों को शामिल किया गया है, जैसे – जनसांख्यिकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक। यहाँ पर निवास, शिक्षा और कार्यशील जनसंख्या के संदर्भ में भारतीय युवाओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं की जाँच करना उपयोगी होगी।

18.3 भारतीय युवा वर्ग की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ

देश में युवाओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए भारत की जनगणना और उसमें दर्ज 15-24 वर्ष आयु-वर्ग के व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। लिंग अनुपात, ग्रामीण-शहरी वितरण, वैवाहिक प्रस्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में युवा जनसंख्या का विश्लेषण करना उपयोगी होगा।

यह देखना महत्वपूर्ण है कि इस शताब्दी के प्रारंभ में देश में युवाओं की जनसंख्या 4 करोड़ थी। 1901 से कुल जनसंख्या में युवाओं का अनुपात अपरिवर्तित रहा है। वर्ष 1971 तक यह लगभग 17 प्रतिशत था।

1981 में युवाओं की जनसंख्या 12 करोड़ 20 लाख थी अर्थात् देश की कुल जनसंख्या के 18.5 प्रतिशत से कुछ कम थी। 1951-1981 के दौरान युवाओं की जनसंख्या लगभग दुगुनी 6 करोड़ 20 लाख से 12 करोड़ 20 लाख हो गई। 1991 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या में 18.3 प्रतिशत जनसंख्या युवाओं की है।

18.3.1 युवा जनसंख्या का लिंग अनुपात

1981 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या का 52 प्रतिशत पुरुष युवा थे। लिंग अनुपात के संदर्भ में प्रति 1000 पुरुषों पर 929 महिलाएँ होती हैं। यह देखना महत्त्वपूर्ण है कि भारत में पिछले 20 वर्षों के दौरान प्रति 1000 युवतियों पर युवकों का अनुपात बढ़ता जा रहा है जो कि युवतियों की जनसंख्या में 7 प्रतिशत की गिरावट दर्शाता है।

18.3.2 ग्रामीण-शहरी वितरण

1991 में कुल ग्रामीण और शहरी जनसंख्या में युवा क्रमशः 17.7 और 20.1% थे।

18.3.3 वैवाहिक प्रस्थिति

अधिकतर युवा 20 वर्ष की आयु तक अविवाहित रहते हैं। परंतु भारत में स्थिति भिन्न है, युवा जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग विवाहित है। 1981 में शहरी क्षेत्रों में 15-29 वर्ष की आयु-वर्ग की लगभग आधी युवतियाँ अविवाहित थीं। जबकि केवल 28 प्रतिशत युवतियाँ

ही विवाहित थीं। पिछले जनगणना वर्षों की तुलना में विवाह की वर्तमान औसत आयु बढ़ गई है। फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में काफी युवतियों की शादी कम आयु में ही हो जाती है। 1961-1981 के दौरान अविवाहित रहने वाले युवाओं का अनुपात ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में बढ़ा है।

18.3.4 युवा वर्ग की शिक्षा संबंधी उपलब्धियाँ

भारत में समग्र युवा वर्ग की साक्षरता दर 2002 में 72.6% थी। दूसरे शब्दों में, लिंग और निवास के संदर्भ में निरक्षरों की संख्या अधिक है।

पिछले 20 वर्षों के दौरान साक्षरता दर 24 प्रतिशत से बढ़कर 36 प्रतिशत हुई है। 1961 में दसवीं कक्षा तक शिक्षित युवा 3.6 मिलियन (36 लाख) थे और 1981 में 20.2 मिलियन (2 करोड़ 2 लाख)। दूसरे शब्दों में, यह स्पष्ट रूप में छः गुनी वृद्धि है। युवतियों में यह वृद्धि सुस्पष्ट है। इस वृद्धि के बावजूद देश में आधे युवक और तीन-चौथाई युवतियाँ आज भी लिख-पढ़ नहीं सकते हैं।

18.3.5 युवा वर्ग की कार्यकारी जनसंख्या

आमतौर पर कार्यकारी जनसंख्या का अनुपात रोज़गार-बेरोज़गार दर में व्यक्त किया जाता है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (एन.एस.एस.ओ.) ने अपने आवधिक सर्वेक्षण में इस संबंध में आँकड़े दिए हैं।

i) बेरोज़गारी दर

देश में बेरोज़गारी के आँकड़ों का विश्लेषण स्पष्टतया यह दर्शाता है कि कुल बेरोज़गार व्यक्तियों में युवाओं की अपेक्षाकृत बड़ी संख्या है। विसारिया के अनुसार 1977-78 में रोज़गारप्राप्त जनसंख्या में युवाओं का भाग ग्रामीण युवतियों में 48.5 प्रतिशत से लेकर शहरी युवकों में 79.8 प्रतिशत तक था।

जब शिक्षित युवाओं में बरोज़गारी दर का विश्लेषण किया जाता है तो यह देखने में आता है कि सभी शिक्षित युवाओं में माध्यमिक कक्षा तक शिक्षित बेरोज़गार युवाओं का अनुपात शहरी और ग्रामीण दोनों में अन्य की अपेक्षा अधिक है (देखें तालिका)।

तालिका : शैक्षिक उपलब्धि के अनुसार बेरोज़गारी दर

1977-78

	ग्रामीण		शहरी	
	पुरुष	**महिला**	**पुरुष**	**महिला**
सभी	3.6	4.1	7.1	4.4
निरक्षर	2.5	3.6	3.6	4.4
माध्यमिक (secondary)	10.6	28.6	10.0	33.6
स्नातक (graduate)	16.2	32.3	8.8	31.0

स्रोत : एन.एस.एस.ओ., भारत (1981)

ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण युवाओं की अपेक्षा शहरी युवाओं में रोज़गार की दर कम है। शिक्षित युवा जनसंख्या में तो यह संकट की स्थिति में पहुँच गई है।

देश में युवा बेरोज़गारी संबंधी आँकड़ों का विश्लेषण कुछ उपयोगी प्रवृत्तियों को दर्शाता है,

क) कर्नाटक, उड़ीसा, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और केरल राज्यों में ग्रामीण युवतियों में बेरोज़गारी दर राष्ट्रीय औसत की तुलना में अधिक है जो विचाराधीन वर्ष (1977-78) में 5.6 प्रतिशत थी।

ख) उड़ीसा, बिहार, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल में ग्रामीण युवकों में यह दर 6 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत की तुलना से अधिक थी।

ग) उड़ीसा, बिहार, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और केरल में शहरी क्षेत्रों के युवकों में बेरोज़गारी की दर राष्ट्रीय औसत की तुलना में ऊँची थी।

घ) शहरी युवतियों में बेरोज़गारी सर्वाधिक थी। असम, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में यह दर राष्ट्रीय औसत से अधिक थी।

च) बहुत से राज्यों में ग्रामीण बेरोज़गारी दर शहरी बेरोज़गारी दर की तुलना में प्रभावपूर्ण रूप से कम थी।

18.3.6 युवा जनसंख्या में वृद्धि के निहितार्थ

युवा जनसंख्या में वृद्धि दर के शैक्षिक और रोज़गार अवसर दोनों पर गंभीर परिणाम हुए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में युवाओं की इन विशेषताओं के बीच पायी जाने वाली भिन्नता के बावजूद कुछ सामान्य समस्याओं को आसानी से पहचाना जा सकता है।

भारत में अधिकांश ग्रामीण युवा विद्यालयों से बाहर ही हैं। कुछ स्कूल बीच में ही छोड़ देते हैं। फिर भी विभिन्न सामाजिक स्तरों में शिक्षा का प्रसार हो रहा है। वे युवा जो स्कूल से बाहर हैं उनके चरित्र में कुछ भिन्नता दिखाई देती है। उन बच्चों की किसी न किसी रूप में व्यस्क होने से पहले ही उत्पादन चक्र में काम करने के लिए बाध्य किया जाता है।

ग्रामीण युवाओं की संख्यात्मक प्रधानता के बावजूद इस क्षेत्र को बहुत कम अवसर मिले हैं। यह स्पष्ट है कि ग्रामीण युवाओं को अन्य युवाओं की तुलना में सहभागिता, आत्माभिव्यक्ति और मनोरंजन के लिए शिक्षा ग्रहण करने के कम अवसर उपलब्ध हुए हैं।

बोध प्रश्न 1

1) युवा की परिभाषा किस प्रकार की गई है? उत्तर लगभग चार पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) भारत में युवाओं के अध्ययन के कुछ महत्त्वपूर्ण आयाम बताइए। उत्तर लगभग तीन पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

3) भारतीय युवाओं की कुछ जनसांख्यिकीय विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए। उत्तर लगभग आठ पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) भारत में युवा जनसंख्या पर जनसांख्यिकीय आँकड़ों की महत्ता का संक्षेप में वर्णन कीजिए। उत्तर लगभग तीन पंक्तियों में दीजिए।

.....

.....

.....

18.4 युवा वर्ग की बदलती हुई मूल्य पद्धति और अलगाव

पिछले दो दशकों में हमारी परंपरागत मूल्य पद्धति में बृहत् परिवर्तन हुए हैं। आइए, हम इन परिवर्तनों की विवेचना करें। यह पता लगाएँ कि क्या इन परिवर्तनों का हमारे समाज पर कोई प्रभाव हुआ है? इस संदर्भ में हमने युवाओं के अलगाव पर विशेष ध्यान दिया है।

18.4.1 बदलती हुई मूल्य पद्धति

परंपरागत हिंदू पद्धति में जीवन को सामाजिक दायित्वों सहित चार स्पष्टतः निर्देशित अवस्थाओं में देखा जाता है। इसमें युवा अवस्था को कोई सत्ता प्राप्त नहीं थी। परंतु दूसरी अवस्था अर्थात् गृहस्थ में कुछ कार्य दिए हुए होते थे।

इस पद्धति में वयोवृद्धों को सम्मान दिया जाता था, और "युवावस्था" अलाभकर होती थी। यह भी नोट किया जाना चाहिए कि हिंदू समाज (स्तरीकृत) में शिक्षा कुछ निश्चित जातियों (स्तर) तक ही सीमित थी। इसलिए सामाजिक, आर्थिक और व्यावसायिक गतिशीलता भी लगभग संकुचित थी। आज इस मूल्य को विपरीत देखा गया, विशेषकर स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद यह पद्धति धर्म और क्षेत्र को ध्यान में रखे बिना परिवर्तित हो गई है।

मूल्य पद्धति में परिवर्तन लाने वाला महत्त्वपूर्ण कारक जन शिक्षा पद्धति का विकास था। नई विचारधाराओं और मूल्यों का संचार शिक्षा के माध्यम से किया गया। यह युवा विद्यार्थियों को परिवर्तन के लिए सुग्राही बनाती है। कई समाजशास्त्रीय अध्ययनों में इस विचारधारा का समर्थन किया गया है कि युवा विद्यार्थी परिवार, जाति पदक्रमित प्रस्थिति की धारणाओं (अस्पृश्यता सहित) तर्कसंगति, धर्मनिरपेक्षता, समानता, सामाजिक न्याय, महिलाओं की स्थिति एवं इसी तरह के अन्य क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन के लिए बहुत उत्सुक हैं (डामले 1977, पृष्ठ 203)। इस पर बल दिया जाना चाहिए क्योंकि ग्रामीण और शहरी युवाओं में अंतर के बावजूद उनकी परंपरागत मूल्य पद्धति लगभग समान है।

18.4.2 अलगाव

अलगाव शब्द अन्य लोगों से विमुखता और स्थापित प्रतिमानों के बारे में भ्रम की भावना को दर्शाता है। बहुत से लेखक अलगाव की संकल्पनाओं में शक्ति का अभाव, निरर्थकता, अकेलेपन की भावना और विमुखता जैसी धारणाओं को शामिल करते हैं।

अलगाव के कई कारण हैं। विद्यमान परिप्रेक्ष्य में कुछ कारक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं।

i) पीढ़ी दर पीढ़ी अंतर

उनमें एक है, युवा और वृद्ध पीढ़ी में मतभेद। युवा विशेषकर शहरी क्षेत्रों में अपने माता-पिता पर अधिक आश्रित रहते हैं। एक तरफ तो उनकी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं में वृद्धि हुई है। दूसरी ओर वे परंपराओं की शक्तियों का विरोध करते हैं। आधुनिक भारतीय युवा बहुतमत से परंपरागत मूल्यों और प्रतिमानों से बंधे नहीं रहना चाहते थे। वे धर्मनिरपेक्ष जीवन शैली एवं तर्कसंगत दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं। इससे विरोधाभास पैदा होता है और बाद में यही अलगाव को जन्म देता है।

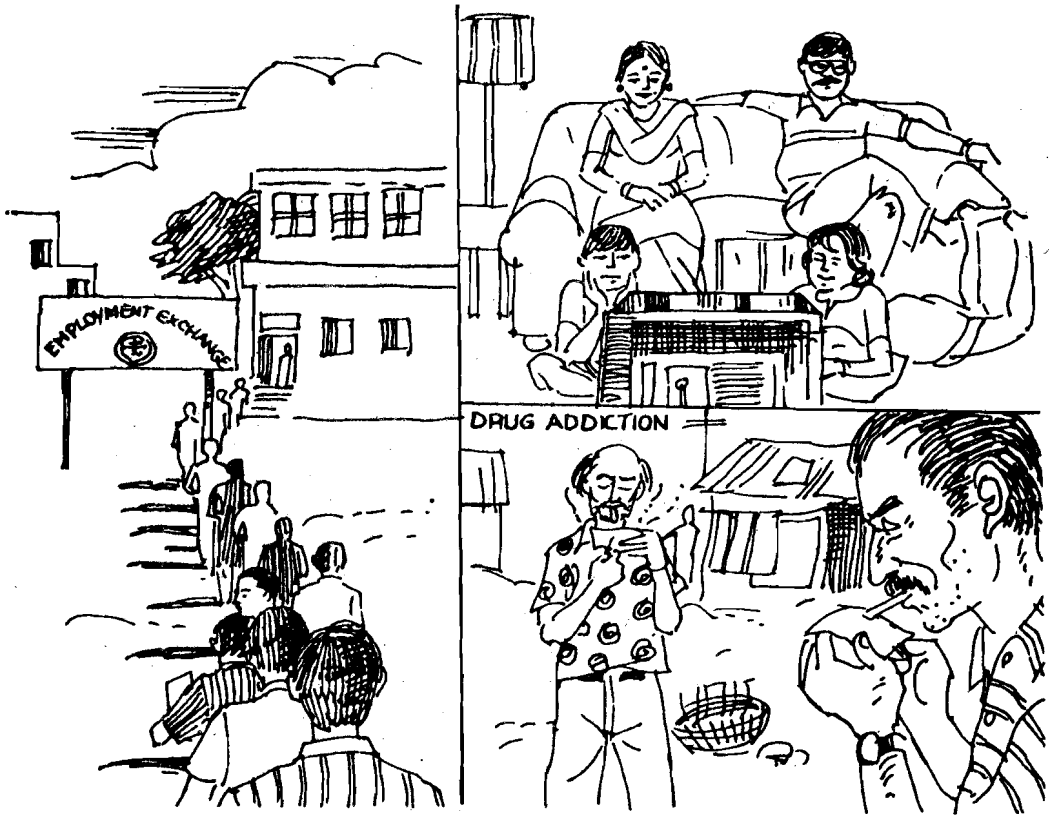

युवा और अन्यत्रभाव

ii) बेरोज़गारी

अलगाव को उत्पन्न करने वाला दूसरा महत्त्वपूर्ण कारक घोर रूप से व्याप्त बेरोज़गारी की स्थिति है। एक आयु स्तर पूरा करने के तुरंत बाद युवा आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं। परंतु जब वे कोई काम पाने में असफल होते हैं, तो वे अकेलापन महसूस करते हैं। यह एक निर्णायक स्थिति होती है। यहाँ पर वे किसी भी बुराई के शिकार हो जाते हैं, जैसे–मानसिक रुग्णता, आपराधिक कार्यकलाप, नशीली दवाओं का सेवन। यहाँ ग्रामीण और शहरी दोनों युवा वर्ग करीब-करीब समान स्थिति में होते हैं। सच्चिदानंद (1988) के अनुसार, "वे (ग्रामीण) बालक जो अपना अध्ययन जारी रखने के लिए शहरों में नहीं जा सकते हैं और गाँव में रह जाते हैं, वे अपना समय गपशप में ही बिताते हैं और कभी-कभी असामाजिक कृत्यों में लग जाते हैं। यह भी पाया गया है कि ऐसे बहुत से शिक्षित युवक राहजनों व डकैतियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। ऐसी स्थिति भारत के बहुत से भागों में आम है।"

उत्तर-पूर्वी और मध्यवर्ती भारत के भागों में कुछ अध्ययन किए गए थे। इनसे विश्वविद्यालय और कालेज परिसरों में "नशीली दवाओं के व्यसन" की व्यापक घटनाओं का पता चला

है। यह पूरी तरह से तय नहीं किया जा सकता है कि अलगावित युवा नशीली दवाओं के शिकार हुए हैं अथवा नशीली दवाओं के व्यसन के कारण ही वे अलगावित हुए हैं। ये दोनों कारक एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। और साथ-साथ कार्य करते हैं।

iii) **पहचान का संकट**

पहचान जागरूकता की ऐसी भावना को दिखाती है जिसमें व्यक्ति जाने अथवा अनजाने में विद्यमान सामाजिक ढाँचे में अस्तित्व, मान्यता और प्रतिफल के लिए प्रयत्न करता है। अपने अस्तित्व के लिए संसाधन प्राप्त करने तथा वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में स्थान पाने के लिए आजकल युवा वर्ग अपनी पहचान को परिभाषित करने की कोशिश करता है।

यह महसूस किया जा रहा है कि शिक्षा और व्यवसाय के मामले में युवाओं को संतोषजनक स्थिति में नहीं रखा गया है। अपने व्यक्तित्व की पहचान की खोज करने के बदले युवा पहचान संकट के विक्षोभ से गुज़र रहे हैं। इसके फलस्वरूप वे अपर्याप्तता के निराकरण के रूप में पुनर्जागरण की ताकतों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इस उभरते हुए पहचान संकट से निपटने के लिए समुचित आदर्श के अभाव में युवा वर्ग विशेषकर शिक्षित बेरोज़गार युवा गलत कार्यों में लग जाते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) परंपरागत हिंदू पद्धति में जीवन को सामाजिक दायित्वों सहित चार स्पष्टतः निर्देशित अवस्थाओं में देखा जा सकता है। इस पद्धति में युवाओं को प्राप्त है :

   क) बिना किसी सामाजिक दायित्व के पर्याप्त प्राधिकार। ( )

   ख) सामाजिक दायित्व सहित पर्याप्त प्राधिकार। ( )

   ग) कोई अधिकार नहीं अपितु जीवन की दूसरी अवस्था अर्थात् गृहस्थ में कुछ कार्य सौंपे हुए होते थे। ( )

   घ) सभी गलत हैं। ( )

2) ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच अंतर होता है; और उनकी परंपरागत मूल्य पद्धति

   क) भी भिन्न होती है। ( )

   ख) लगभग एक-समान होती है। ( )

   ग) इन दो विपरीत मापों में निर्धारित नहीं की जा सकती। ( )

3) निम्नलिखित में से कौन-सा युवा वर्ग के अलगाव का कारण नहीं है?

   क) युवा और वृद्ध पीढ़ी के बीच मतभेद ( )

   ख) व्यापक बेरोज़गारी ( )

   ग) नशीली दवाओं की लत ( )

   घ) रोज़गार का विस्तृत कार्य क्षेत्र ( )

18.5 छात्र असंतोष

युवा छात्रों में असंतोष की घटना छात्रों और प्राधिकारियों दोनों स्तरों की भावनाओं का महत्त्वपूर्ण सूचक है। हाल के दशकों में शैक्षणिक संस्थाओं में असंतोष की काफी घटनाएँ

हुई हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि युवा असंतोष और शैक्षणिक संस्थाओं का आपस में गहरा संबंध है।

देश में शैक्षणिक संस्थाओं के परिसरों में असंतोष पर किए गए एक समाजशास्त्रीय अध्ययन के अनुसार यह देखा गया था कि 1968 से 1971 की अवधि के दौरान देश के लगभग सभी राज्य छात्रों की हिंसात्मक कार्रवाइयों से प्रभावित हुए थे (विनायक, 1972)। छात्र असंतोष के 744 मामलों में से 80 प्रतिशत मामले हिंसात्मक थे और लगभग, 20 प्रतिशत शांतिपूर्ण थे। हिंसात्मक और शांतिपूर्ण आंदोलनों का अखिल भारतीय अनुपात 4 : 5 से लेकर 1 : 0 था और बिहार तथा मद्रास में 2 : 3 से लेकर 1 : 0 के बीच था। मध्य प्रदेश में 31 : 0 से 0 : 0 था। दक्षिणी राज्यों के विश्वविद्यालयों में अपेक्षाकृत अधिक शांति थी अथवा कम हिंसा हुई। छात्रों की हिंसात्मक कार्रवाइयों की सबसे अधिक संख्या दिल्ली में थी, इसके बाद उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में। सबसे कम असंतोष वाले राज्य गुजरात, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, हरियाणा, तमिलनाडु और राजस्थान थे।

18.5.1 छात्र असंतोष के कारण

असंतोष और हिंसा के कारणों की मोटे तौर पर दो श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं, 'परिसर के अंदर' और 'परिसर के बाहर'। परिसर के अंदर के मुद्दों में शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों प्रकार के मुद्दे होते हैं। परिसर के अंदर के मुद्दे परीक्षा, शुल्क, आवास सुविधाओं से संबंधित होते हैं। परिसर से बाहर के मुद्दे सहानुभूतिक हड़ताल (बंद) और छात्रों तथा गैर, छात्रों के बीच विवाद से जुड़े होते हैं।

विनायक ने अपने अध्ययन में पाया है कि 1968-71 की अवधि के दौरान असंतोष के 65 प्रतिशत से अधिक मामले परिसर से बाहर के मुद्दों पर थे। लगभग 24 प्रतिशत मामले शैक्षणिक मुद्दों के कारण थे और लगभग 11 प्रतिशत मामले अन्य कारणों से थे। राज्यवार विश्लेषण से पता चला है कि आंध्र प्रदेश में 66 मामले, असम में 25, बिहार में 44, दिल्ली में 128, गुजरात में 7, हरियाणा में 6, हिमाचल प्रदेश में 7, जम्मू और कश्मीर में 15, तमिलनाडु में 51, महाराष्ट्र में 14, उड़ीसा में 22, पंजाब में 50, राजस्थान में 18, उत्तर प्रदेश में 109 और पश्चिम बंगाल में 101 मामले घटित हुए। इस अध्ययन ने दर्शाया की 1968-71 के दौरान लगभग सभी राज्य छात्र हिंसा से प्रभावित थे। इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता है कि पिछले दशक के दौरान परिसरों में आंदोलनों के कई मामले दर्ज किए गए।

असंतोष के कारणों को समाप्त करने के लिए, कुछ विशिष्ट अध्ययन किए गए थे।

i) एक स्रोत के अनुसार असंतोष का अंतर्निहित कारण युवाओं में निराशा की सामान्य भावना है। शिक्षित छात्रों में यह विश्वास घर करता जा रहा है कि वर्तमान व्यवस्था की सरकारी नीतियों में गुण और योग्यता की उपेक्षा की जाती है।

ii) छात्र असंतोष का अन्य महत्तवपूर्ण कारण छात्र यूनियन संगठन के साथ राजनैतिक दलों का हस्तक्षेप रहा है। कई अध्ययनों ने इन विचारों का समर्थन किया है कि छात्र शाखा जैसे युवा कांग्रेस, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, एस.एफ.आई. आदि के माध्यम से छात्रों को विभिन्न राजनीतिक दलों का सहयोग मिलता है। ये कई तरीकों में हिंसा भड़काने के लिए उत्तरदायी रहे हैं। राष्ट्रीय राजनीतिक दल और उनके स्थानीय निकायों में आने वाले चुनावों के लिए अपनी शक्ति परीक्षण के क्षेत्र के रूप मे छात्रों का उपयोग करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

iii) असंतोष को प्रोत्साहित करने वाला तीसरा कारण बेरोज़गारी है। यह सुपरिचित तथ्य है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली उपयुक्त रोज़गार की गारंटी नहीं देती है। इसके बहुत से कारण है : उचित मार्गदर्शन, प्रशिक्षण, आजीविकोन्मुखी कार्यक्रम की कमी और रोज़गार की अनुपलब्धता।

हाल ही में प्रवीण विसारिया (1985) द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार यह सुस्पष्ट है कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रयासों के बावजूद जनसंख्या में वृद्धि के साथ-साथ बेरोज़गारी की मात्रा भी लगातार बढ़ती जा रही है। विसारिया ने यह निष्कर्ष निकाला है कि शहरी क्षेत्रों में बरोज़गार महिलाओं से बेरोज़गार पुरुषों की संख्या अधिक है। इस अध्ययन ने ग्रामीण पुरुषों की बेरोज़गारी दर में सीमांत वृद्धि का संकेत दिया है परंतु ग्रामीण महिलाओं की बेरोज़गारी दर में तेजी से कमी का उल्लेख किया है। युवा जनसंख्या (15-24 आयु-वर्ग) के लिए यह प्रवृत्ति समान है। शहरी युवकों और युवतियों दोनों में बेरोज़गारी की दर में वृद्धि हुई है और ऐसा ही ग्रामीण युवकों में भी देखा गया है।

18.5.2 छात्र असंतोष के निहितार्थ

भारत में कुल बेरोज़गार जनसंख्या में युवा अपेक्षाकृत काफी अधिक है। बेरोज़गारी के कई कारण हैं और वे जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक विकास और शिक्षा प्रसार से बहुत समय से जुड़े हुए हैं। युवाओं में बेरोज़गारी वृद्धि के परिणाम स्वयं युवाओं के लिए और उनके परिवारों के लिए होते हैं। यह संकेत दिया गया है कि शिक्षित युवाओं की संख्या में वृद्धि और शिक्षा की गुणवत्ता की तटस्थता ने इसको और भी बिगाड़ दिया है, खास तौर पर छात्र असंतोष के लिए यह जिम्मेदार है।

सोचिए और करिए 1

भाग 18.5 को फिर से पढ़िए। हाल ही के वर्षों में विश्वविद्यालय परिसरों में असंतोष और हिंसा के पीछे कौन-कौन से मुद्दे रहे हैं, इनकी सूची बनाइए। अपने क्षेत्र में छात्र असंतोष के अपने स्वयं के अनुभव लिखिए। यदि संभव हो तो अपने अनुभवों की तुलना अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों के साथ कीजिए।

18.6 युवा समस्या के कुछ संभावित दृष्टिकोण

सच्चिदानंद (1988) के अनुसार युवाओं के प्रश्न पर चर्चा के लिए दो संभव और सम्पूरक दृष्टिकोणों पर विचार किया जा सकता है। यह या तो व्यक्ति विशिष्ट अथवा सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य जिसमें वह रहता है, पर आधारित हो सकता है।

विभिन्न प्रदेशों में युवाओं की विशेषताओं में विद्यमान अंतर के बावजूद और समान समस्याओं की पहचान की जा सकती है। पहला, जनसंख्या में ग्रामीण युवाओं का प्रतिशत काफी ऊँचा है। इस क्षेत्र को अपनी भूमिका अदा करने के अवसर दिए जाने चाहिए। इस संबंध में शिक्षा का अभाव एक बड़ी बाधा है जबकि शिक्षा स्वयं से ही सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाने में सक्षम नहीं है। फिर भी, यदि परिवर्तन लाना है तो यह अपेक्षा की जाती है कि शैक्षिक अवसरों की पूर्ति की जाए। इसलिए भावी कार्यक्रम शिक्षा नीतियाँ विद्यमान क्षेत्रीय और स्थानीय परंपराओं की तुलना में लचीली और अधिक सुग्राह्य होनी चाहिए। इसके अलावा, विकास की गलत प्रक्रिया द्वारा युवा सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। इसलिए भावी शैक्षणिक नियोजन में अध्ययन से कार्य को जोड़ने की स्थिति तथा रोज़गार की संभावना पर विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

कोष्ठक 1

युवा सेवाएँ

राज्य व केंद्र सरकारों द्वारा विभिन्न युवा कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। इन कार्यक्रमों में युवाओं को इस योग्य बनाया जाता है कि वे : क) अपनी कुशलता और व्यक्तित्व को बेहतर बनाएँ और विकास की प्रक्रिया में प्रभावी रूप से भाग ले सकें, और ख) उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध कराए जाएँ ताकि वे राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में सहभागी बन सकें। हमने इनमें से कुछ कार्यक्रमों की जानकारी नीचे दी है।

i) **राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)**

इस योजना के उद्देश्य हेतु महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को स्वैच्छिकता और चयन के आधार पर समाज सेवा एवं राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रम में शामिल किया जाता है।

ii) **नेहरू युवक केंद्र (एन.वाई.के.)**

इस योजना के अंतर्गत गैर-विद्यार्थीगण एवं ग्रामीण युवाओं को यह ध्यान में रखते हुए सेवाएँ दी जाती हैं कि वे अपने व्यक्तित्व और रोज़गार क्षमता को बेहतर बना सकें। ये केंद्र आयोजित करते हैं– युवा नेतृत्व व प्रशिक्षण कार्यक्रम, राष्ट्रीय एकीकरण कैम्प, बायोगैस संयंत्र प्रचालन, मधुमक्खी पालन, परासैन्य प्रशिक्षण आदि। बहुत से स्थानों पर केंद्रों के माध्यम से स्वरोज़गार के लिए ग्रामीण युवा प्रशिक्षण की योजनाएँ कार्यान्वित की जाती हैं।

iii) **स्काउट और गाइड**

यह अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन का एक भाग है जिसका उद्देश्य लड़के और लड़कियों का चरित्र निर्माण करना है।

बहुत-सी अन्य योजनाएँ– जैसे अंतर्राष्ट्रीय युवा प्रतिनिधि मंडल आदान-प्रदान, राष्ट्रीय एकीकरण संवर्धन, राष्ट्रीय स्वयंसेवी सेवा योजना, भारत में युवाओं से संबंधित युवा प्रदर्शन, युवाओं के लिए होस्टल, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार योजना (इंडिया, 1990)।

दूसरा महत्त्वपूर्ण मुद्दा देश की सामान्य जनसंख्या संरचना में युवाओं की स्थिति से संबंधित है। भारत में पिछले पाँच दशकों में जीवन संभाव्यता में काफी वृद्धि हुई है। अगले बीस वर्ष में इसके और अधिक बढ़ने की आशा है। इसलिए युवाओं और पीढ़ी के बीच स्पष्ट विभाजन आवश्यक होगा। समाजशास्त्रीय शब्दों में इसका अभिप्राय है – दो व्यापक परंतु स्पष्ट समूह : वृद्ध और युवा। चूँकि भूमिका और उत्तरदायित्व व्यक्तियों से जुड़े होते हैं, इसमें एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में सत्ता का हस्तांतरण होता है अर्थात् बुजुर्गों से युवाओं में। इसलिए दो पीढ़ियों के बीच विचारों और कार्यों में संघर्ष और विरोध की संभावना रहती है। इस प्रकार का विरोध भावी वर्षों में सामने आ सकता है। फिर भी, संघर्ष की समस्या को हल करने के तरीके हैं। एक तो परिवार की विचारधारा में यथासंभव परिवर्तन संघर्ष का समाधान कर सकता है। लोकतांत्रिक स्वरूप के पारिवारिक वातावरण से यह संघर्ष टल सकता है। इसी प्रकार, अन्य सामाजिक संस्थाओं जैसे – नातेदारी और जाति प्रथा में भी आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न 3

1) छात्र असंतोष के मुख्य कारण क्या हैं? लगभग सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) गलत कथन के सामने टिक (✓) निशान लगाइए।

हाल ही में हुए एक अध्ययन के अनुसार—

क) शहरी क्षेत्रों में बेरोज़गार पुरुषों की संख्या बेरोज़गार महिलाओं से अधिक है।

( )

ख) ग्रामीण पुरुषों के बेरोज़गारी दर में बहुत कम वृद्धि हुई है जबकि ग्रामीण महिलाओं की बेरोज़गारी दर में तेजी से कमी हुई है। ( )

ग) शहरी युवाओं के बेरोज़गारी दर में वृद्धि हुई है। ( )

घ) कोई भी कथन सही नहीं है। ( )

3) भारत में युवाओं विशेषतया ग्रामीण युवाओं की समस्या के संभावित दृष्टिकोणों की संक्षेप में चर्चा कीजिए। लगभग सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

18.7 सारांश

इस इकाई में भारत में युवाओं से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। हमने युवा शब्द की परिभाषा करने में कठिनाइयों का उल्लेख किया है। यद्यपि इस शब्द की परिभाषा 'आयु वर्ग' श्रेणी के रूप में की गई है परंतु सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों पर भी बल दिया गया है। इन्हें युवाओं के अध्ययन में पहचान करने वाले मानदंड के रूप में माना गया है। हमने युवाओं के कुछ जनसांख्यिकीय पहलुओं की चर्चा विस्तार से की है, जैसे–आयु-लिंग, शहरी-ग्रामीण वितरण, वैवाहिक प्रस्थिति, शैक्षणिक उपलब्धियाँ और बेरोज़गारी दर।

परंपरागत मूल्य पद्धति से युवाओं का विरोध, अलगाव और पहचान संकट पर संक्षेप में चर्चा की गई है। युवाओं की परिस्थिति और समस्याओं की चर्चा कुछ विस्तार से की गई

है। अंत में युवाओं के लिए भावी कार्यक्रम पर समाजशास्त्रियों के प्रेक्षणों का उल्लेख भी किया गया है।

18.8 शब्दावली

अलगाव (alienation) : अन्य लोगों से विमुखता की भावना और विद्यमान प्रतिमानों के बारे में अस्पष्टता।

जनसांख्यिकी (demography) : मानव जनसंख्या से संबंधित घटनाओं का अध्ययन। जैसे– जन्म, विवाह और मृत्यु, आप्रवसन और उन्हें प्रभावित करने वाले कारक। इसमें सांख्यिकी भी अंतर्निहित है।

पहचान (identity) : जिसका वर्णन किया गया अथवा निश्चय के साथ कहा गया है, उसी के समान स्थिति की मौजूदगी।

लिंग अनुपात (sex ratio) : प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या जैसा कि भारत की जनगणना में परिभाषित किया गया है।

मूल्य पद्धति (value system) : साझे सांस्कृतिक मानदंड जिनके अनुसार औचित्य-नैतिक, सौंदर्यबोध-वस्तुओं की, अभिवृद्धि की, आकांक्षा और आवश्यकताओं की तुलना और निर्धारण किया जा सकता है।

हिंसा (violence) : संघर्ष का चरम रूप।

युवा (youth) : निर्धारित जनसंख्या में 15-24 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्ति। यह सामाजिक-सांस्कृतिक अथवा सांख्यिकीय श्रेणी है।

युवा संस्कृति (youth culture) : वृहत्तर सामाजिक प्रणाली की पहचान योग्य उप-सामाजिक प्रणाली।

18.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) युवक की परिभाषा सामाजिक और सांख्यिकीय दोनों श्रेणियों में की गई है। सामान्यतः 15 से 24 वर्ष की आयु के व्यक्ति युवा माने जाते हैं।

2) भारत में युवाओं के अध्ययन के महत्त्वपूर्ण आयाम सामाजिक जनसांख्यिकी और सांस्कृतिक हैं।

3) सामान्य जनसंख्या में युवाओं के जनसांख्यिकीय लक्षणों को आयु-लिंग-आवास वितरण के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है।

   ग्रामीण-शहरी अनुपात 3 : 1 है (शहरी युवक 33 मिलियन, ग्रामीण युवक 92 मिलियन है)। युवाओं की औसत विवाह आयु 22 वर्ष है। आधे युवक और तीन-चौथाई युवतियाँ अभी भी निरक्षर है।

4) मुख्य उपयोग शिक्षा प्रसार और रोज़गार के अवसरों के सृजन से संबंधित है।

बोध प्रश्न 2

1) ग

2) ख

3) घ

बोध प्रश्न 3

1) छात्र असंतोष के कारणों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में रखा जा सकता है : परिसर के अंदर और परिसर से बाहर। परिसर के अंदर के मुद्दे परीक्षा शुल्क, आवास सुविधाओं आदि से संबंधित होते हैं। परिसर से बाहर सहानुभूति सूचक, हड़ताल (बंद) और छात्रों एवं गैर-छात्रों के बीच विवाद से जुड़े होते हैं। सामान्यतया छात्र असंतोष में निराशा की भावना, बेरोज़गारी, राजनैतिक हस्तक्षेप आदि का भी काफी हाथ होता है।

2) घ

3) ग्रामीण युवाओं को अपनी भूमिका अदा करने के अवसर दिए जाने चाहिए। समाज में परिवर्तन लाने के लिए उन्हें पर्याप्त रूप से शिक्षा सुविधाएँ देनी होंगी। शिक्षा नीतियों को क्षेत्रीय परंपरा के अनुसार लचीला बनाना होगा। भावी शैक्षणिक नियोजन में अध्ययन से कार्य को जोड़ने तथा स्थिति के अनुसार रोज़गार की संभावनाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।